P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

20वीं सदी में राजस्थान में संस्कृत

निहाल सिंह
सहायक आचार्य,
संस्कृत विभाग,
महारानी श्री जया राजकीय
पी.जी. महाविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान

सारांश

''वसुदेव कुटुम्बकम्'' की शिक्षादात्री, संस्कारित एवं सुपूजित संस्कृत भाषा का राजस्थान में प्रारम्भ से ही सम्मान होता आया है, संस्कृत–निधि की अक्षुण्णता को बनाये रखने हेतु राजस्थान में संस्कृत शिक्षा का एक सुदृढ़ स्तम्भ खडा हो सका तथा इसी कारण जयपुर **अपराकाशी** नाम से संज्ञित हुआ। राजस्थान में संस्कृत शिक्षा का जो इतिहास रहा उसका कालक्रमानुसार संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

20वीं सदी से पूर्व अपरिग्रही ब्राह्मण अपने–अपने घरों में विद्यार्थियों को परम्परागत संस्कृत शिक्षा दे रहे थे। राजा महाराजा, सम्पन्न जमींदार, धनी–मानी, सेठ–साहूकार तथा अन्य साधनसम्पन्न व्यक्ति संस्कृत की पाठशालाएँ खोलने और उनके संचालन कर संस्कृत शिक्षा के प्रोत्साहन एवं सम्वर्द्धन में यथाशक्ति योगदान में तत्पर थे। यही कारण था कि मुस्लिम शासन के प्रारम्भ में राजकीय सहायता बन्द हो जाने के बावजूद भी संस्कृत शिक्षा फलती–फूलती रही। इस प्रकार शासन से उपेक्षित रहने पर भी संस्कृत प्रेमियों, पोषकों और विद्वानों के प्रयास से संस्कृत भाषा की अखण्ड परम्परा को सुरक्षित रखा जा सका। राजस्थान में प्राचीनकाल से अनेक प्रकाण्ड विद्वानों के प्रादुर्भाव से संस्कृत शिक्षा प्रसारित हुई। राजपूताने के इतिहास से ज्ञात होता है कि कछवाहवंशीय नरेशों ने वीरता, दानशीलता एवं सुयोग्य शासन के साथ ही ज्ञान–विज्ञान की धारा को भी अक्षुण्ण रखा। आमेरमहाराज पृथ्वीसिंह (1502 ई.) के समय से ही संस्कृत भाषात्मक रचनाओं का उपलब्ध होना यहां के शासकों के संस्कृत भाषा के प्रति उत्पन्न स्वाभाविक प्रेम को प्रकट करता है। इनके समय में **पृथ्वीराजविजय**[1] नामक ऐतिहासिक महाकाव्य का निर्माण हुआ था जिसकी खंडित प्रति एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता में ग्रन्थांक 10434 पर उपलब्ध है। तदनन्तर मिर्जा राजा मानसिंह प्रथम (16वीं सदी) से आज तक संस्कृत साहित्य सृजन की धारा अविरल गति से प्रवाहित रही है।

मुख्य शब्द : अपराकाशी, पृथ्वीराजविजय।

प्रस्तावना

वास्तव में साहित्य की व्यापकता और महत्ता का श्रेय जयपुर के नरेशों एवं साहित्यसेवियों को है। जयपुर राज्य सदैव ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक रहा है। जय– पराजयों के संघर्षों में भाग लेते हुए भी यहां के शासकों ने अच्छे तथा योग्य कलाकारों, कवि कोविदा एवं साहित्य महारथियों को प्रश्रय दिया। इस प्रान्त के राज्याश्रय में राजस्थानीय विद्वानों द्वारा सृजित संस्कृत भाषात्मक साहित्य एवं उन्नति का कालक्रमानुसार परिचय प्रस्तुत है–

18वीं शताब्दी

श्री गोस्वामी शिवानंद भट्ट[2]– धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, तंत्र–मंत्र एवं सामान्य विषयवस्तु को आधार मानकर 40 ग्रन्थ लिखे।

गोस्वामी जनार्दन भट्ट–श्रृंगारशतक, वैराग्य शतक, मंत्र चन्द्रिका ग्रन्थ।

गोस्वामी चक्रपाणि भट्ट–पंचायतन प्रकाश।

श्री निकेतन गोस्वामी– सभेदार्यासप्तशती।

श्री रत्नाकर भट्ट पौण्डरीक –जयसिंह कल्पद्रुम।

श्री सुधाकर भट्ट पौण्डरीक – साहित्यसार संग्रह।

श्री व्रजनाथ भट्ट दीक्षित–अणुभाष्य, पद्यतरंगिणी।

कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट –ईश्वरविलास(महाकाव्य), राघवगीतम्, प्रकीर्णक, पद्यमुक्तावली, सुंदरीस्तवराज, वृत्तमुक्तावली, प्रशस्ति मुक्तावली।

श्री श्यामसुन्दर लट्टू –माधवसिंहार्याशतक, चौलोपनयनप्रयोग, पर्वनिर्णयसार, समापवर्तनप्रयोग।

श्री हरिहर भट्ट –कुलप्रबन्धक(ऐतिहासिक महाकाव्य)।

श्री जगन्नाथ सम्राट्– रेखागणित, सम्राट–सिद्धान्त, सिद्धान्तसार।
श्री केवलराम ज्योतिषराय –अभिलाषशतक, गंगास्तुति, ज्योतिषसारण्यः, तिथिनिर्णयादि।
श्री हरेकृष्ण मिश्र – वैदिकवैष्णवसदाचार।
श्री मायाराम गौड पाठक–व्यवहाराध्याय।
महाराजा जयसिंह द्वितीय – यन्त्रराजरचना (ज्योतिष)।
श्री नयनसुख उपाध्याय–उकवरराजतरंगिणी (अनुपलब्ध)।
श्री हरिलाल–प्रतिष्ठाचन्द्रिका (अनुपलब्ध)।
श्री महीधर–रामगीता(अनुपलब्ध)।
श्री काशीनाथ–लंघनपथ्यनिर्णय।
श्री दीनानाथ सम्राट–श्लोकसिन्धु।
श्री सदाशिव 'दशपुत्र'–आचारस्मृतिचन्द्रिका।
देवर्षि द्वारकानाथ भट्ट –मालवगीतम्।
श्री सखाराम भट्ट पर्वणीकर –आख्यातवाद।
श्री सीताराम भट्ट पर्वणीकर–नृपविलास, लघुरघुकाव्य, घटकर्परटीका, नलविलास (महाकाव्य), जयवंश(महाकाव्य), (काव्य) बुधवर्यावर्णनम्(मुक्तकपद्य), कुमारसंभवकाव्य टीका, राघवचरित (खण्डकाव्य), लक्षणचन्द्रिकादि 30 ग्रन्थ विभिन्न विधाओं में लिखे गये।

इनके अलावा शिवराम भट्ट पर्वणीकर, गंगाराम पौण्डरीक, रामचन्दभट्ट पर्वणीकर,सदाशिव भट्ट जैसे संस्कृतज्ञों का भी उल्लेख मिलता है, लेकिन इनके रचनात्मक कार्य की अनुपलब्धता है।

19वीं शताब्दी

इस शताब्दी में भी साहित्य–सृजन अपनी उसी गति से चलता रहा जिस गति से पिछली शताब्दियों में आ रहा था, इस शताब्दी में सन् 1840 से 1870 तक की कुछ रचनाएँ निम्नानुसार रहीं –

श्री परमानंद शर्मा दशरथविलापः, मारीचवधम् मेघनादवधम्।
पं देवीप्रसाद शास्त्री– शतचण्डीविधानम्, गंगसिंहकल्पद्रुम।
श्री माधवकवीन्द्र– मुक्तकलहरी।
पं. अम्बिकादत्त व्यास –शिवविवाह(खण्डकाव्य), पुष्पवर्षा (काव्य) ,शिवराजविजय (उपन्यास), कथाकुसुम (कहानीसंग्रह), उपदेशलता (काव्य), साहित्यनलिनी।
केदारनाथशर्मा – कामसूत्रव्याख्या।
श्रीसम्पतकुमार नृसिंहाचार्य–विक्टोरियावैभवम्, शिक्षानिक्षेप।
पं.देवीचन्द्रशास्त्री–चन्द्रिका प्रशस्ति।
पं. परमानन्द शर्मा –विधवाविलाप।
पं. जे.एस. विद्याभूषण– संस्कृतचन्द्रिका।
पं. लक्ष्मीनारायण –जयनगराष्टकम्।

19वीं शताब्दी में जब राजस्थान छोटी–छोटी देशी रियासतों में विभक्त था तथा राजनैतिक दृष्टि से अनेकानेक संघर्षों, राजाओं व सरदारों के आपसी झगडों, शान और सम्मान के लिए एक दूसरे के राज्य पर आक्रमण की घटनाओं के बीच उलझा हुआ था, वहीं संस्कृत संरक्षण हर रियासत और उसके शासक के लिए गौरव व सम्मान का विषय था। सभी रियासतों में संस्कृत शिक्षा और विद्वानों का बाहुल्य था। शासकों में श्री भावसिंह, जयसिंह, रामसिंह, अनूपसिंह, आदि की संस्कृत के प्रतिरूचि थी। अन्य प्रदेशों से योग्यतम विद्वानों को बुलाना, संस्कृत के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था, संस्कृतज्ञों को सहायता, ज्योतिष यंत्रालय की स्थापना, संस्कृत काव्यकारों को राज्याश्रय आदि इसके जीवन्त उदाहरण हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

बीसवीं शताब्दी में राजस्थान में संस्कृत की क्या स्थिति रही ? किस गति से संस्कृत विकास कर रही थी? किन लोगों के सहयोग से संस्कृत प्रगति–पथ पर अग्रसर थी ? प्राचीन ऋषि–महर्षियों द्वारा प्रस्तुत ज्ञान का संरक्षण एवं सम्वर्धन किन परिस्थितियों में किन के सहयोग से कैसे हो रहा था ? इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति प्रस्तुत लेख से होती है।

राजस्थान में संस्कृतविकास में सहायक प्रमुख संस्कृत संस्थाएँ

महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर [3] (1844 ई.)

डेकन कॉलेज पूना (1821ई.), कलकत्ता संस्कृत कॉलेज (1824ई.) आदि कॉलेजों के बाद, प्राचीनतम संस्कृत शिक्षा का केन्द्र महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर (1844ई.) था। इसका शुभारम्भ तात्कालिक जयपुर राज्य द्वारा 1844 ई. में किया गया जो कि 1852 ई. में महाराजा सवाई रामसिंह के द्वारा विशुद्ध सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित किया गया, जिसके प्रथम प्राचार्य प्रो. हरिदास शास्त्री थे। इनके अलावा सफलतम प्राचार्य–परम्परा[4] में निम्नलिखित विद्वान हैं–

	प्राचार्य	–	कार्यकाल
1.	पं.एकनाथ चौधरी मैथिल	–	1865–1869
2.	रामभजन सारस्वत	–	1869–1893
3.	लक्ष्मीनाथ शास्त्री	–	1893–1907
4.	म.म. दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	–	1911–1926
5.	म.म. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	–	1926–1944
6.	पं. पट्टाभिराम शास्त्री	–	1945–1952
7.	माधवकृष्ण शर्मा	–	1952–1955
8.	पं. चन्द्रशेखर द्विवेदी	–	1955–1964
9.	पं. गोविन्द नारायण शर्मा	–	1964–1973
10.	खड्गनाथ मिश्र	–	1974–1976
11.	रामनारायण चतुर्वेदी	–	1976–1978

म.स. रामसिंह यहीं तक संतुष्ट नहीं थे अपितु बंगाल, आंध्रप्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों से विद्वानों को लाकर यहां नियुक्त किया। तात्कालिक जयपुरीय विद्वत्परम्परा में प्रौढ वैयाकरण पं. जानकी लाल चतुर्वेद, नैयायिक पं. वृन्दावनाचार्य कथाभट्ट, साहित्य मर्मज्ञ वेदान्तकेसरी पं. गोपीनाथ दाधिमथ आदि प्रमुख थे। संस्था में प्रारम्भ से ही वेद, वेदांग, साहित्य, व्याकरण, न्याय, दर्शन, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिषशास्त्र आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन–अध्यापन विषय के चूडान्तदर्शी विद्वानों द्वारा कराया जाता था। यहाँ संस्कृत की परीक्षा प्रणाली पूर्व में अन्याश्रित थी, किन्तु 1886–1887 ई. में यहाँ परीक्षा प्रणाली का प्रारम्भ हो गया, जो कि देश की गिनी चुनी छः या सात परीक्षा प्रणालियों में से एक थी।

महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर में चारों वेद, ज्योतिष सामान्यदर्शन, साहित्य, व्याकरण, न्याय आदि के

अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था अनवरत रही। साथ ही आधुनिक विषय परम्परा में अंग्रेजी साहित्य, राजनीति विज्ञान, हिन्दी साहित्य आदि विषयों के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था भी है। परीक्षाएँ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर आयोजित कराता है।

जयपुर के साथ ही सीकर, खेतडी, मालपुरा, शाहपुरा आदि ठिकानों के शासकों ने तथा अन्य संस्कृतानुरागियों ने भी संस्कृत पाठशालाओं को स्थापित कर संस्कृत संरक्षण की परम्परा को जीवित रखा।

महाराणा संस्कृत कॉलेज, उदयपुर (1864ई.)

उदयपुर नगर प्राचीन काल से ही शस्त्र और शास्त्र की उपासना में सिद्धहस्त माना जाता है। महाराणा शम्भु सिंह द्वारा संस्कृत स्थापनार्थ 1864ई. में श्री शम्भुरत्न पाठशाला के नाम से संस्था स्थापित की जिसके प्रथम प्रधानाध्यापक एक महाराष्ट्रीय पण्डित थे। महाराज सज्जनसिंह के शासनकाल में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पाठशाला के पाठ्यक्रम में अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि को जोडा। 1931ई0 में तात्कालिक नरेश भूपाल सिंह के आदेश से संस्था का नाम ''महाराणा भूपाल रत्न ब्रह्म संस्कृत विद्यालय हुआ।

1940ई. में यह पाठशाला महाराणा आचार्य संस्कृत कॉलेज के रूप में उभरी जिसमें वेद, व्याकरण, साहित्य, न्याय, वेदान्त, मीमांसा आदि विषयों के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था थी। कॉलेज–प्राचार्यों में रत्नेश्वराचार्य अजिदेव, पं. मिल्कीराम शास्त्री, पं. शोभालाल शास्त्री, पं. त्रिलोकीनाथ मिश्र, पं. रामचन्द्र मिश्र, पं. मार्कण्डेय मिश्र, पं. खड्गनाथ मिश्र, डॉ. रामनारायण चतुर्वेदी, पं. श्री कैलाश चतुर्वेदी, रतनलाल दाधीच, श्री राधेश्याम कलावटिया, श्री मिथिलेश कुमार शर्मा, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद मिश्र, श्री सोहनलाल शर्मा, पं. ताराशंकर शर्मा आदि रहे। परीक्षा व्यवस्था मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर से होती थी।

इसके अलावा नाथद्वारा, कांकरौली, बेंगू, बांसवाडा, डूँगरपुर, चित्तौडगढ आदि रियासतों के साथ बूंदी, भरतपुर, झालावाड, भवानीमण्डी, धौलपुर व करौली आदि में भी संस्कृत पाठशालाओं का प्रचलन था।

अलवरनरेश स्वयं संस्कृतप्रेमी थे, जिन्होंने एक उच्च स्तरीय ऋषिकुलपरम्परा पर आधारित आयुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की।

बीकानेर नरेश अनूपसिंह ने शार्दूल संस्कृत विद्यापीठ और गंगा संस्कृत पाठशाला की स्थापना तथा संस्कृत की विख्यात अनूप संस्कृत लाइब्रेरी संस्कृतानुरागियों के लिए एक भेंट के समान थी।

जोधपुर राज्य में शासकों द्वारा दरबार संस्कृत कॉलेज की स्थापना के साथ सिरोही, मेडता, नागौर आदि स्थानों पर भी संस्कृत शिक्षा के केन्द्र संचालित किये गये।

20वीं शताब्दी

देशी रियासतों के एकीकरण (1948) के बाद संस्कृत शिक्षा के लिए राज्य सरकार के साथ कुछ प्रान्तव्यापी प्रबल अराजकीय संगठनों का भी सराहनीय सहयोग रहा जिनका विवरण संक्षेपतः प्रस्तुत है –

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर (1948ई.)

राजस्थानसंस्कृत साहित्य सम्मेलन की स्थापना सन् 1948 ई. में म.म. श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी की प्रबल प्रेरणा से जयपुर में हुई। प्रारम्भिक संस्थापना में म.म.श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, विद्यावारिधि स्व. रामधारी शास्त्री, श्री मार्कण्डेय मिश्र, श्री सूर्यनारायण भट्ट, श्री मथुरानाथ शास्त्री, बाबू श्री चन्द्रदत्त ओझा, श्री नंदकिशोर साहित्याचार्य, श्री विद्याधर शास्त्री आदि विद्वानों का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

सम्मेलन के महनीय सहयोग से स्वतंत्रता के बाद संस्कृत शिक्षा का प्रशासन स्तर पर खूब पुनर्विकास हुआ। राजस्थान में संस्कृत के संरक्षण और समृद्धि का विकास ही इसका उद्देश्य रहा।उद्देश्यों की पूर्ति और सार्वदेशिक प्रसार की दृष्टि से राजस्थान के विभिन्न प्रमुख नगरों में प्रायः इसके अधिवेशन होते रहे। आयोजित सफल अधिवेशनोंका संक्षेपतः विवरण प्रस्तुत है–

अधिवेशन	स्थान	सन्	सभापति
1.	जयपुर	1948	श्री रामधारी शास्त्री
2.	बीकानेर	1949	भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री
3.	जोधपुर	1952	डॉ. मथुरालाल शर्मा
4.	अलवर	1953	श्री नरोत्तम लाल शर्मा
5.	कोटा	1954	श्री विद्याधर शास्त्री
6.	उदयपुर	1956	श्री देवी शंकर तिवाडी
7.	सीकर	1957	श्री देवी शंकर तिवाडी
8.	भीलवाडा	1960	श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
9.	अजमेर	1961	श्री लक्ष्मीलाल जोशी
10.	रतनगढ	1962	श्री लक्ष्मीलाल जोशी
11.	सरदारशहर	1964	पुरोहित श्री स्वरूपनारायण
12.	भीलवाडा	1965	पुरोहित श्री स्वरूपनारायण
13.	मनोहरपुर	1966	श्री मोहनलाल सुखाडिया
14.	जयपुर	1986	डॉ. श्रीमती कमला
15.	जयपुर	2001	डॉ. श्रीमती कमला

सम्मेलन संस्कृतज्ञों, लब्धप्रतिष्ठविद्वानों, शिक्षा शास्त्रियों व प्रमुख राजनेताओं के परामर्शानुसार तात्कालिक प्रशासन के लिए समय–समय पर प्रस्ताव प्रेषित कर तदनुकूल क्रियान्विति में सफल हुआ।

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (1953 ई.)

भारत की अमूल्य निधि संस्कृत में लिखे ग्रन्थों की सुरक्षा हेतु बलिदान करने पडे फिर भी अधिकांश ग्रन्थ नष्ट हो गये। उस समय मुद्रण के अभाव में अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में हस्तलिखित ग्रन्थों का ही उपयोग होता था। शासक योग्यतम लिपिकारों से ग्रन्थ लिखवाकर सुरक्षित रखना गौरव व प्रतिष्ठा का विषय मानते थे। आंग्ल शासकों ने हमारे मन और मस्तिष्क को ऐसा पलटा कि हम हमारे ऋषिकल्प पूर्वजों की हस्त लिखित कृतियों को भुला कर पाश्चात्य संस्कृति के झमेले में पड़ गये।

स्वतंत्र होने के बाद खोया गौरव पाने हेतु राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में की गई पुरातत्त्व मन्दिर की स्थापना से ग्रन्थों के ह्रास में सामान्यतः कमी आयी। 1954ई. तक यह सामान्य स्थिति में रहा। 1955 ई. में जोधपुर में पृथक् से भवन–निर्माण के बाद सन् 1958 तक संस्कृत तथा अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सुरक्षास्वरूप अस्तित्त्व लेकर उभरा। 1960–61ई. में इसकी 08 शाखाएँ राज्य के विभिन्न शहरों में बनी, जिनके द्वारा विभिन्न स्थानों पर बस्ते व अलमारियों में स्थित सैकडों मौलिक एवं विशिष्ट ग्रन्थ जो कि गृहस्वामी के यहाँ समाप्त हो जाते थे, उनका संग्रहण एवं संरक्षण किया जा सका। जोधपुर के अलावा ये सात प्रमुख शहर निम्न हैं–

उदयपुर

विभिन्न विषयों के लगभग 3500 ग्रन्थ हैं। प्रतिष्ठान के अधीन आने से पूर्व यह शाखा ''सरस्वती भण्डार'' के नाम से प्राचीन एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों की उपलब्धता हेतु प्रसिद्ध थी।

जयपुर

जोधपुर से पूर्व इसका मुख्य कार्यालय 1950 ई. में जयपुर में था। शाखा में पुरोहित हरि नारायण (बी. ए–विद्याभूषण) द्वारा हस्तलिखित ग्रन्थसूची के नाम से एक संग्रहग्रन्थसूची प्रकाशित हो चुकी है।

कोटा

करीब 5000ग्रन्थ हैं जो कि राज्य के प्राचीन शासकों द्वारा समय–समय पर संग्रहित किये गये।

टोंक

अरबी/फारसी के करीब 3200 ग्रन्थों के साथ काव्य, इतिहास, तर्कशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ भी हैं।

बीकानेर

ग्रंथसंकलन में उच्चतम इस शाखा में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी आदि के लगभग 20000 ग्रन्थ संकलित हैं।

अलवर

'पुस्तकशाला' के नाम से पूर्वख्यात इस शाखा में 15वीं शताब्दी तक के हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत आदि विषयों के लगभग 6000 ग्रन्थ उपलब्ध हैं जो वैदिक ग्रंथों से लेकर पुराण, दर्शन, काव्य, ज्योतिष, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि विषयों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

चित्तौडगढ़

ऐतिहासिक महत्त्व के संस्कृत एवं राजस्थानी भाषा के अनेकानेक ग्रंथों का संकलन यहां है।

इस प्रकार प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रगति के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर होता रहा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर (1957ई.)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर पारम्परिक संस्कृत की प्रवेशिका एवं उपाध्याय तथा सामान्य या आधुनिक शिक्षा की सैकण्डरी एवं 12वीं तक के पाठ्यक्रमों में नवीनता लाकर उनकी परीक्षादि का कार्य करता है। 1957 से पूर्व यह कार्यभार राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर पर था। पारम्परिक संस्कृत शिक्षा के लिए अधीनता प्राप्त करने वाले संस्थानों में राजकीय, अराजकीय, निजी एवं मान्यता प्राप्त विद्यालय आते हैं।

संस्कृत शिक्षा निदेशालय, जयपुर(1958 ई.)

राजस्थान के एकीकरण (1948ई.) से पूर्व संस्कृत पाठशालाओं का नियन्त्रण ''जिला निरीक्षक'' पर होता था, लेकिन यह व्यवस्था संस्कृत पाठशालाओं के लिए विकास एवं लाभ नहीं दे पाई। इसलिए संस्कृत पाठशालाओं के लिए पृथक् निरीक्षणालय की स्थापना हुई। समस्त राजकीय, सहायता एवं मान्यता प्राप्त संस्थाओं के नियन्त्रण हेतु निरीक्षक कार्यालय की स्थापना हुई। किन्तु 1955 ई. में शिक्षा विभाग के पुनर्गठन के दौरान संस्कृत निरीक्षणालय का विस्तार करने के बजाय उसका अस्तित्त्व सीमित कर दिया गया तथा उसे जयपुर से हटाकर बीकानेर स्थानान्तरित कर सामान्य शिक्षा निदेशालय में ही रखने का निर्णय लिया गया। संस्कृत विद्वानों तथा संस्कृत प्रेमीजननायकों के आग्रह के फलस्वरूप संस्कृत निरीक्षणालय को यथापूर्व स्वतंत्र रखने की नीति निर्धारित हुई। इसके साथ ही संस्कृत शिक्षा के योजनाबद्ध विकास व उन्नति के लिए उपयुक्त सुझाव देने हेतु शिक्षाविद् श्री लक्ष्मीलाल जोशी की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की गई। जोशी कमेटी के प्रतिवेदन के फलस्वरूप 1958 ई. में सरकार द्वारा ''संस्कृत शिक्षा निदेशालय'' की पृथक से स्थापना की गई तथा समस्त संस्कृत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का प्रशासनिक नियन्त्रण एवं विकास का दायित्व उसके अधिकार क्षेत्र में सौंप दिया गया। संस्कृत निदेशालय के संस्थापन के बाद संस्कृत शिक्षा का क्रमिक विकास होता गया। अधीन संस्कृत संस्थाओं का विवरण निम्न प्रकार से है–

संस्कृत–शिक्षण संस्थाएँ

संस्कृत शिक्षा निदेशालय को 1958ई. में भी अधिकांशतः एक अध्यापकीय या दो अध्यापकीय संस्कृत विद्यालय ही विरासत में मिले, जिनके न तो उपयुक्त भवन थे और न ही छात्रों की पर्याप्त संख्या। अतः विभागीय आयोजना का आधार संस्कृत संस्थाओं की संख्यात्मक वृद्धि न होकर वर्तमान संस्थाओं की गुणात्मक वृद्धि रही। फलतः उनकी स्थिति एवं स्तर का समुन्नयन हुआ।

प्रशासनिक स्वरूप[5](2004तक)

निदेशक	01
संयुक्त निदेशक	01
सहायक निदेशक	02
सम्भागीय संस्कृत शिक्षा अधिकारी	05
सम्भागीय संस्कृत निरीक्षक	01
शैक्षणिक अधिकारी	02
उप निरीक्षक	08

सहायक उपनिरीक्षक 12

सम्बद्धता

1961–62 में प्रवेशिका, उपाध्याय संस्थाओं का सम्बन्धन, शिक्षा विभागीय परीक्षा कार्यालय से हटाकर राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से तथा 1970–71 में शास्त्री, आचार्य एवं शिक्षा शास्त्री स्तर के महाविद्यालयों का सम्बन्धन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से हो गया। 2003–04 में, शास्त्री, आचार्य एवं शिक्षा–शास्त्री स्तर के महाविद्यालयों का सम्बन्धन सन् 2001 में नवनिर्मित राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से हो गया, जिसके अधीन आचार्यस्तरी, 21 महाविद्यालय, शास्त्रीस्तरी, 25 महाविद्यालय, शिक्षा–शास्त्री स्तर के 06 महाविद्यालय थे।

फलतः संस्कृतपरीक्षाओं का मान्यताक्षेत्र बढा, व्यावसायिक द्वार खुले व उत्तीर्ण छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु विभिन्न क्षेत्रों–विधिसंकाय, कलासंकाय, शिक्षासंकाय में प्रवेश आदि के अधिकारों की सीमा विस्तृत हुई। अब रोजगार के लिए संस्कृत केवल शिक्षाविभाग तक ही सीमित न रहकर प्रशासनिक सेवा की भर्ती सम्बन्धी परीक्षाओं के लिए डाक, तार व पंचायत समिति सेवा एवं मंत्रालयिक कर्मचारी सेवा में भी प्रवेश किया जाने लगा। इस प्रकार से संस्कृत संस्थाओं से जनता का निकट का सम्बन्ध कायम हुआ।

1958 ई. में संस्कृतशिक्षाविभाग की स्थापना के समय निरीक्षक, संस्कृत शिक्षणालय एक पौधे के रूप में अपनी जडें फैला रहा था। उस समय राज्य में 33 राजकीय एवं 76 अराजकीय संस्थाएँ थीं जिनमें लगभग 10,000 छात्र अध्ययनरत थे।

विद्वत्सम्मान परम्परा

संस्कृत शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा व योगदान करने वाले राजस्थानीय संस्कृत विद्वानों को सम्मानित करने के उद्देश्य से राजस्थान–सरकार ने अगस्त 1976 से एक योजना प्रारम्भ की जिसके तहत् संस्कृत दिवस समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष पॉच विद्वानों को शॉल, श्रीफल एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया जाता है। इस परम्परा में अब तक अनेक संस्कृत विद्वान सम्मानित हो चुके हैं।

राजस्थान संस्कृत अकादमी

राजस्थान की संस्कृतशिक्षा के विकास एवं प्रौढ़ता के क्रम में राजस्थान सरकार द्वारा एक उत्कृष्ट कार्य करते हुए ''राजस्थान संस्कृत अकादमी'' की स्थापना की गई। इसकी स्थापना 1980 ई. में संस्कृत दिवस के अवसर पर जयपुर में की गई।

अकादमी की मुख्य प्रवृत्तियॉ

संस्कृत भाषा को लोकप्रय बनाने, मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने, उपलब्ध संस्कृत साहित्य को प्रकाशित कराने तथा नवोदित प्रतिभा को प्रकाश में लाने से सम्बन्धित अकादमी की प्रमुख पृवत्तियां हैं।

संस्कृत अकादमी अपने स्थापना वर्ष से लेकर अब तक निरन्तर अपनी प्रवृत्तियों द्वारा उद्देश्य की पूर्ति हेतु कार्यरत है। अकादमी प्रतिवर्ष विभिन्न जयन्तियॉ, वेद, ज्योतिष, पौरोहित्य एवं संस्कृत वाङ्मय के महत्वपूर्ण विषयों पर लेखकसम्मेलन, कवि–सम्मेलन, प्रतियोगिताएँ आदि गतिविधियॉ कराती है।

अकादमी ने 1980 से लेकर अब तक 70 से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन पूरा किया है जो कि एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। साथ ही यह संस्कृत के लेखकों, छात्रों एवं संस्कृतानुरागियों के स्वरचित ग्रन्थों को प्रकाशित करवाने के लिए आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है। अकादमी से एक अपनी **त्रैमासिकी पत्रिका स्वरमंगला** का भी प्रकाशन निरन्तर रूप से हो रहा है।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर (1983 ई)

संस्कृतशिक्षण के पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने की दृष्टि से केन्द्रीय संस्कृत परिषद् ने देश के प्रत्येक राज्य में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापित करने की महत्वपूर्ण संस्तुति के तहत 1983 ई. में स्थापित केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर अब राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान जयपुर परिसर के नाम से जानी जाती है। वर्तमान में देश में 08 संस्कृत विद्यापीठ (इलाहाबाद, जम्मू, पुरी, गुरूवायूर, जयपुर, लखनऊ, गरली व श्रृंगेरी) हैं।

राजस्थान की यह विद्यापीठ वर्तमान में तीन विभागों में कार्य कर रही है।

शोध एवं प्रकाशन विभाग

इसके अन्तर्गत साहित्य, व्याकरण, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, जैनदर्शन आदि विषयों पर अनेक छात्र शोधरत हैं। राजस्थान में आज भी हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ और दुर्लभ पाण्ड लिपियॉ विद्यमान हैं जिनके संग्रहण, संरक्षण, सम्पादन व प्रकाशन से संस्कृत के इतिहास में नये पृष्ठ जुडेंगे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु विद्यापीठ ने पं. गोपीनाथ दाधीच की रचना माधवस्वातंत्र्यम् तथा भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की रचनाएँ गीर्वाणगिरागौरवम्, प्रबन्धपारिजात, शाब्दबोधादिवादपंचकप्रकाश, तन्त्रदीप, न्यायकुसुमांजलि की प्राचीन टीका जैसे ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य पूर्ण किया है।

प्राचीनशास्त्र विभाग

इसमें साहित्य, व्याकरण, धर्मशास्त्र, जैनदर्शन, ज्योतिष विषयों के साथ हिन्दी, अंग्रेजी व राजनीति आदि आधुनिक विषयों का शास्त्री, आचार्य पाठ्यक्रमों में अध्ययन कराया जाता है।

शिक्षा शास्त्र विभाग

इस विभाग का मुख्य उद्देश्य संस्कृत–शिक्षण की आधुनिकतम तकनीकों का प्रशिक्षण देकर अच्छे अध्यापक तैयार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए छात्र–छात्राओं को शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इस प्रशिक्षण की विशेषता यह है कि इसमें शिक्षा–दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, पाठशाल ाप्रबन्ध, शिक्षा की आधुनिक समस्याएँ, स्काउट एवं गाईड शिक्षा तथा प्राथमिक चिकित्सा शिक्षा के साथ–साथ संस्कृत शिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही इस संस्थान में प्राक्शास्त्री (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) तथा (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम), आचार्य (विभिन्न विधाओं में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) तथा विद्या वारिधि (पीएच.डी.) अनुसंधान के अध्ययन–अध्यापन की सुविधा भी उपलब्ध है।

इस तरह राजस्थान में एक उत्कृष्टतम पीढी के निर्माण में निरत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर (केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ) उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मानित विश्वविद्यालय हैं।

राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर (2001ई.)

सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय के सांगोपांग अध्ययन–अध्यापन का संचालन करने, सतत विशेषज्ञ अनुसंधान और उससे आनुषांगिक अन्य विषयों की व्यवस्था करने, संस्कृत वाड्.मय में निहित ज्ञान–विज्ञान के अनुसंधान पर आधारित सरल वैज्ञानिक पद्धति से व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तुत करने के उद्देश्य से तथा साथ ही अन्य महत्वपूर्ण अनुसंधानों के परिणामों व उपलब्धियों को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से राजस्थान में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 का अधिनियम 10) की अनुमति महामहिम राज्यपाल द्वारा दिनांक 02 सितम्बर 1998 को दी गई। दिनांक 06 फरबरी 2001 को संस्कृत विश्वविद्यालय ने मूर्त्तरूप लिया, जिसके प्रथम कुलपति डॉ. मण्डन मिश्र नियुक्त किये गये। विश्वविद्यालय में अग्रांकित संकाय और उपाधियॉ हैं–

संकाय

वेद–वदांग, दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति, श्रमण विद्या संकाय, आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय आदि में अध्ययन और अध्यापन की व्यवस्था है।

उपाधियॉ

शास्त्री (स्नातक), आचार्य (स्नातकोत्तर), शिक्षा–शास्त्री (बी.एड.), विद्यावारिधि (पीएच.डी.), विद्या वाचस्पति (डी. लिट्) आदि की अध्यन व्यवस्था है।

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में विभिन्न संकायों के अन्तर्गत प्रारम्भिक–कम्प्यूटर–अनुप्रयोग, पर्यावरण– अध्ययन विषयों के अतिरिक्त वैकल्पिक विषयों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, हिन्दी, राजनीति विज्ञान, इतिहास आदि आधुनिक विषयों का अध्ययन–अध्यापन भी होता है।

इस प्रकार से राजस्थान में देववाणी संस्कृत शिक्षा का एक विशाल इतिहास रहा है जोकि संक्षिप्ततया प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत के विकास एवं प्रचार–प्रसार कार्य में जयपुर के शासकों का तथा आश्रित विद्वानों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है, जिसके कारण उनका नाम न केवल राजस्थान के संस्कृत साहित्य में अपितु विश्व के संस्कृत साहित्य में चिरस्मरणीय रहेगा। हर स्थिति में राजस्थान में संस्कृत शिक्षा का अस्तित्व रहा तथा अपने प्रगति पथ पर 21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भी अग्रसर होती हुई गतिमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *विगत 19वीं शताब्दी में संस्कृत शिक्षा की स्थिति (डॉ. दुर्गावती उपाध्याय) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।*
2. *स्मारिका, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर 1965 भीलवाडा अधिवेशन सम्पादक – मोतीलाल जोशी, मुद्रक –अजन्ता प्रिन्टर्स, जयपुर*
3. *स्मारिका (1977) राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर। सम्पादक– मोतीलाल जोशी।*
4. *स्मारिका, संस्तवः(2001) राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर। सम्पादक–राजकुमार जोशी।*
5. *निर्देश–पुस्तिका (1991 प्रथम संस्करण)–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर*
6. *संविरा, (1997) राजस्थान संस्कृत शिक्षा निदेशालय, जयपुर। सम्पादक–प्रो. तारा शंकर शर्मा। मुद्रक –त्रिवेणी एजुकेशनल प्रिन्टर्स, बरकत नगर, जयपुर।*
7. *रचना विमर्श – हिन्दी संस्कृत द्विभाषी त्रैमासिकी पत्रिका। सम्पादक–प्रो. तारा शंकर शर्मा पाण्डेय प्रकाशक –विनोद कुमार नाटाणी, 5, नाटाणी भवन मिश्रराजा का रास्ता चांदपोल, जयपुर।*

पाद टिप्पणी

1. *राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन भीलवाडा अधिवेशन(1965) स्मारिका।*
2. *महाराज विष्णुसिंह एवं जयसिंह के आश्रित।*
3. *पूर्व में यह सैकण्डरी स्कूल था जहां मैट्रिक तक अध्यापन होता था। 1873 ई. में इण्टरमीडियेट स्तर की, 1890ई. में स्नातक स्तर की तथा 1896ई. में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारम्भ हुईं।*
4. *Hundred fifty years of Sanskrit education by Devarshi Kalanath Shastri*
5. *निदेशालय जयपुर संस्कृत शिक्षा, से प्रकाशित विवरण पत्र (30 अगस्त 2004)*